Year-5 Volume: IV, October-December, 2023 Issue-20 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

8. बैगा जनजाति में पारम्परिक माध्यमों के प्रयोग पर सोशल मीडिया का प्रभाव – एक अध्ययन

सुलभ सिंह
पी.एचडी. शोधार्थी
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल
डॉ. संजीव गुप्ता
शोध निदेशक
अध्यक्ष, जनसंचार विभाग
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल

सारांश

वैश्वीकरण और डिजिटल प्रौद्योगिकी का युग लोगों को पहले से कहीं अधिक जुड़े रहने का साधन देता है। अन्य जगहों की तरह, सोशल मीडिया आदिवासी समुदाय में तेजी से फैल रहा है जहां यह लोगों के लिए समसामयिक मुद्दों पर राय व्यक्त करने के लिए एक आभासी सार्वजनिक मंच का गठन करता है और यह कई अन्य चीजों के लिए रास्ता खोल रहा है। हाल के वर्षों में सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में हुए बदलाव के बाद से सोशल मीडिया का उपयोग सरकारों और व्यक्तियों दोनों द्वारा विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जा रहा है। सोशल मीडिया का उपयोग राजनीतिक जानकारी प्रसारित करने और समूहों को संगठित करने का काम पिछले 10 वर्षों से बढ़ गया है। यह पेपर हाल के वर्षों में जनजातियों पर सोशल मीडिया के उपयोग और प्रभावों पर ध्यान केंद्रित करेगा और कैसे प्रौद्योगिकी ने आदिवासी रिश्तेदारी को संगठित करने के लिए एक आभासी स्थान प्रदान किया है और सोशल मीडिया के कारण व्यवहार परिवर्तन के रूप में क्या बदलाव हो रहे हैं।

मुख्य शब्द- सोशल मीडिया, आदिवासी समुदाय और सोशल मीडिया के प्रभाव

प्रस्तावना

संचार का सामान्य अभिप्राय लोगों द्वारा अपने विचार,भावनाओं एवं ज्ञान का कुछ विशिष्ट संकेतों द्वारा आदान प्रदान करना है। मानवीय सभ्यता के विकास के क्रम में क्रमिक रूप से विभिन्न संचार माध्यमों का विकास परिलक्षित होता है। संचार के विभिन्न माध्यम न केवल मानवीय विकास की गतिविधियों से प्रभावित हुए अपितु उन्होंने इन गतिविधियों को

Year-5 Volume: IV, October-December, 2023 Issue-20 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

भी प्रभावित किया। संचार प्रक्रिया मानवीय व्यवहारों पर असर डालती है। इसलिए संचार अध्ययन हेतु यह पता होना महत्त्वपूर्ण है कि व्यक्तिगत स्तर पर लोग सूचना, जानकारी एवं संदेश की अनुभूति किस प्रकार करते हैं,उनको ग्रहण करने के लिए किस प्रकार राजी होते हैं तथा इससे उनकी व्यक्तिगत व्यवहारों एवं सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों पर क्या प्रभाव पड़ता है।

बैगा जनजातीय समूह के बदलते हुए जनानांकीय परिदृश्य यथा- साक्षरता एवं युवा जनसंख्या- ने भी न्यू मीडिया को संचार माध्यम के रूप में प्रभावित किया है। जनजातीय वर्गों की आकांक्षाओं को न्यू मीडिया ने न केवल मंच दिया है अपितु विभिन्न वैश्विक परिकल्पनाओं से उनका परिचय भी करवाया है।

इस सम्पूर्ण परिदृश्य में जनजातीय विकास संबंधी परम्परागत प्रश्नों को भी बल मिला है। विभिन्न विद्वानों का यह मत रहा है कि प्रायः जनजातीय मूल्यों एवं विकास की विभिन्न अवधारणाओं के मध्य एक तनाव देखा जाता रहा है। विकास की टॉप डाउन परिप्रेक्ष्यों का जनजातीय मूल्यों पर पड़ने वाले विपरीत प्रभावों को भी विद्वानों ने रेखांकित किया है। आख़िर न्यू मीडिया माध्यमों ने जनजातीय संस्कृति एवं मूल्यों पर किस प्रकार प्रभाव डाला है। क्या न्यू मीडिया माध्यमों ने डिजिटल समावेश को प्रोत्साहित करती है अथवा डिजिटल डिवाइड संकल्पना के अनुरूप जनजातीय वर्गों को विकास से दूर करती है। निश्चित रूप से प्रत्येक संचार माध्यम के सम्मुख यक्ष प्रश्न यही रहता है कि आखिर किस प्रकार जनजातीय क्षेत्रों की उनकी परम्परागत संस्कृति के साथ तालमेल बिठाते हुए उनको विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जाए।

इस संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन यह विचार व्यक्त करता है कि यदि न्यू मीडिया के विभिन्न उपकरणों को जनजातीय संस्कृति के पारंपरिक संचार प्रतिमानों के अनुरूप ढाला जाए तथा जनजातीय कला,साहित्य एवं स्वास्थ्य संबंधी विरासत का दस्तावेजीकरण उक्त माध्यमों द्वारा सुनिश्चित किया जाए तो जनजातीय क्षेत्रों की विभिन्न समस्याओं का समाधान जनजातीय संस्कृतिक मूल्यों द्वारा प्रस्तुत विकल्पों द्वारा ही किया जा सकता है।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में डिंडोरी जिले में रहने वाले बैगा जनजाति के बीच नवीन संचार माध्यमों के उपयोग का अध्ययन करके यह पता करने का प्रयास किया गया है –

1. बैगा जनजाति के बीच नवीन संचार माध्यमों का प्रयोग विभिन्न आयु वर्ग में विभिन्न कारणों के लिया किया जा रहा है।

Year-5 Volume: IV, October-December, 2023 Issue-20 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

2. बैगा जनजाति के बीच नवीन संचार माध्यमों के बढ़ते इस्तेमाल से व्यापक व्यवहार परिवर्तन हुआ है।

3. बैगा जनजाति के बीच नवीन संचार माध्यमों के प्रयोग से उनका सांस्कृतिक और व्यवहारिक पक्ष ज्यादा मजबूत हुआ है।

साहित्य समीक्षा

सोशल मीडिया को जनसंचार उपकरण के माध्यम से विविध दर्शकों तक सूचना, विचार, राय आदि भेजने के तकनीकी साधन के रूप में परिभाषित किया गया है। एक अर्थ में, शब्द और चित्र वे माध्यम हैं जिनके द्वारा विचार और भावनाएँ संप्रेषित होती हैं, लेकिन माध्यम को केवल इसी अर्थ तक सीमित रखने की आवश्यकता नहीं है। कोई भी वेबसाइट जो सामाजिक संपर्क की अनुमति देती है, उसे सोशल मीडिया माना जाता है, जिसमें फेस बुक, माइस्पेस और ट्विटर जैसी सोशल नेटवर्किंग साइटें, गेमिंग साइट्स और क्लब पेंगुइन, सेकेंड लाइफ और द सिम्स जैसी आभासी दुनिया शामिल हैं; यूट्यूब जैसी वीडियो साइटें; और ब्लॉग भी हैं. ऐसी साइटें आज के युवाओं को मनोरंजन और संचार के लिए एक पोर्टल प्रदान करती हैं और हाल के वर्षों में तेजी से बढ़ी हैं। जनसांख्यिकीय और सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रों से परे, आदिवासी समुदाय तेजी से सोशल मीडिया के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़ रहे हैं और संवाद कर रहे हैं।

यह जनजातीय युवा पेशेवरों के लिए विपणन, जुड़ने और व्यवसाय के अवसर खोजने, नियोक्ताओं को कर्मचारी ढूंढने और बेरोजगारों को काम खोजने के लिए बहुत अच्छा है। सोशल मीडिया ने हजारों नौकरियां और आय के नए रास्ते तैयार किए हैं। सोशल मीडिया राजनीतिक परिवर्तनों को सुविधाजनक बनाता है: ऑनलाइन नेटवर्क सामाजिक आंदोलनों को सूचना प्रसारित करने और लोगों को संगठित करने का एक त्वरित, सस्ता तरीका प्रदान करते हैं। हाल के वर्षों में सबसे बड़े बदलावों में से एक यह है कि, बढ़ते हुए दर्शक भी मीडिया के उपयोगकर्ता हैं; वे मीडिया स्रोतों द्वारा बनाए गए प्लेटफ़ॉर्म पर सामग्री का योगदान करते हैं। इनमें अमेज़ॅन पर उत्पाद समीक्षा, फेसबुक अपडेट, यूट्यूब पर वीडियो, इंस्टाग्राम के माध्यम से तस्वीरें, ट्वीट, किसी समाचार आइटम पर टिप्पणी या टैग और अनगिनत अन्य तरीके शामिल हैं, जिससे युवा उपयोगकर्ता अब अपनी सामग्री बना सकते हैं और इसे दूसरों के लिए उपलब्ध करा सकते हैं। आत्म-मूल्य को बढ़ावा देने के माध्यम से सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं पर महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालता है। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म, जो आभासी वातावरण में सबसे बुनियादी मनोवैज्ञानिक ज़रूरतों को पूरा करते हैं, और इस तरह उपयोगकर्ताओं को सोशल नेटवर्किंग गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रेरित करते हैं। सफल सोशल मीडिया उपयोगकर्ता स्वायत्तता और सक्षमता के साथ संबंध स्थापित करने और सुधारने के लिए उपलब्ध अवसरों का लाभ उठाते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म में उपयोगकर्ताओं की प्रेरक आवश्यकताओं को पूरा करने की अभूतपूर्व क्षमता है।

Year-5 Volume: IV, October-December, 2023 Issue-20 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

कुल मिलाकर, सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म जो दूसरों के साथ संवाद करके सदस्यों के बीच समुदाय की भावना पैदा करते हैं, उनकी स्थिरता और सफलता को बनाए रख सकते हैं और सुधार सकते हैं (Berezan 2015)।

बैगा जनजाति विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) में से एक है। वे मुख्य रूप से छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में रहते हैं। परंपरागत रूप से, बैगा अर्ध-खानाबदोश जीवन जीते हैं और काटकर और जलाकर खेती करते हैं। वे अपनी आजीविका के लिए मुख्य रूप से लघु वन उपज पर निर्भर हैं। गोदना बैगा संस्कृति का एक अभिन्न अंग है, प्रत्येक आयु और शरीर के अंग पर अवसर के लिए एक विशिष्ट टैटू आरक्षित है।

बैगा लोग झूम खेती करते हैं, जिसे अक्सर 'बेवर' या 'दहिया' कहा जाता है। वे ज़मीन पर हल नहीं चलाते, क्योंकि उनका मानना है कि इससे उनकी धरती माँ की छाती पर नुकसान पहुँचेगा।

कुछ बैगाओं ने अतीत में "बैगानी" को अपनी मातृभाषा बताया था, पिछली कुछ शताब्दियों में यह भाषा लुप्त हो गई है और वर्तमान में बैगा द्वारा बोली जाने वाली बोली हिंदी का ही एक रूप है। अब इसे गोंडी से प्रभावित छत्तीसगढ़ी की एक किस्म के रूप में पहचाना जाता है। अधिकांश बैगा हिंदी बोलते हैं, और कुछ गोंडी और मराठी जैसी क्षेत्रीय भाषाएँ भी जानते होंगे।

बैगा जंगलों के सच्चे निवासी हैं जो उनके पूर्वजों द्वारा सौंपी गई रीति-रिवाज और परंपराओं को लेकर जीते हैं। आनुवंशिक रूप से, ऐसा प्रतीत होता है कि वे इंडोऑस्ट्रेलियाई आदिवासी समूह से जुड़े हुए हैं। हाल के मानवशास्त्रीय अध्ययनों से पता चला है कि माइटोकॉन्ड्रियल डीएनए केवल इन जनजातियों और ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों के बीच साझा होता है। बैगा जंगल और प्रकृति के कट्टर रक्षक और उपासक हैं।

सामाजिक रूप से बैगा आदिवासी महिलाओं के साथ उनके समाज के पुरुष सम्मानपूर्वक व्यवहार करते हैं। उनकी आदतें बहुत अच्छी हैं यानी वे शाम के समय एक साथ बैठते हैं और अपने व्यक्तिगत मामले पर एक साथ चर्चा करते हैं। उनके समाज में लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता और उनके साथ बहुत सम्मानजनक व्यवहार किया जाता है। ये अपने पुरुष साथी के साथ बहुत मेहनत करती हैं और कुछ मामलों में ये काम उनसे भी ज्यादा होता है। वे सुबह से शाम तक खेत में काम करते हैं।

मीडिया और व्यवहार के ऊपर तमाम शोध कार्य हुए हैं और दोनों के बीच काफी समानताएं देखी गई है।

विश्लेषण

Year-5 Volume: IV, October-December, 2023 Issue-20 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

जनजातीय क्षेत्रों में सोशल मीडिया माध्यम के इस्तेमाल पर बहुत कम शोध कार्य हुए हैं। टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज ने अपने एक अध्ययन में छत्तीसगढ़ राज्य में इंटरनेट इस्तेमाल पर रिपोर्ट जारी की है।

विश्लेषण करके यह निष्कर्ष निकाला गया है कि यह देखा गया है कि 31.6% किशोर (हाई स्कूल के छात्र) सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर अत्यधिक निर्भर होते हैं।

89.5% का मानना है कि सोशल मीडिया शिक्षा के लिए मददगार साबित हो सकता है। शोध में यह भी पाया गया कि प्रतिदिन 37.1% युवा सोशल मीडिया पर 1 से 2 घंटे बिता रहे हैं। 38% उत्तरदाता इस बात से भी सहमत थे कि सोशल मीडिया के ज्यादा इस्तेमाल से उन्हें आंखों में जलन होने लगती है।

57.1% की राय थी कि सोशल मीडिया युवाओं को बुद्धिमान बनाता है और 74.7% उत्तरदाताओं का यह मानना है कि सोशल मीडिया समाज की बेहतरी के लिए उपयोगी है। शोध में यह भी देखा गया है कि ग्रामीण क्षेत्रों के युवा इंटरनेट और मोबाइल फोन के उपयोग के बारे में कम जागरूक थे जो युवा शहरी क्षेत्रों में रहते हैं।

डिंडोरी जिले में लगभग 50 % लोगों तक इन्टरनेट की पहुँच है और डिजिटल आबादी के लगभग 65% लोगों तक सोशल मीडिया की पहुँच है। बैगा जनजाति के बीच सोशल मीडिया का इस्तेमाल स्वाभाविक है और इसके इस्तेमाल को लेकर कोई भी निषेध नहीं है।

बैगा जनजाति के बड़े हिस्से में सोशल मीडिया का उपयोग युवाओं द्वारा किया जा रहा है, जिनके लिए यह मुख्यतः मनोरंजन और जागरूकता का साधन है। युवा आज की तारीख में कंटेंट कंस्यूमर हैं। फेसबुक और इन्स्ताग्राम का इस्तेमाल खुद के ईगो संतुष्टि के लिए कर रहे है। सोशल मीडिया ने यह विश्वास बनाने में स्वतंत्रता पा ली है की आभासी दुनिया में आप नई पहचान बना सकते हैं और अपने कला को मंच दे सकते हैं। युवाओं द्वारा अपने मित्रता सूची में नए नाम जोड़ने के लिए भी प्रयास किया जाता है ताकि आभासी दुनिया में उनके अभिव्यक्तियों पर प्रतिक्रिया दिया जाये। कई युवाओं ने यह भी बताया है की उन्हें नवीन संचार माध्यमों कि वजह से रोजगार के अवसरों के बारे में मालूम चलता है और इसी कि वजह से कई युवा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी शुरू कर दिए हैं । युवाओं के अनुभव में नवीन संचार माध्यमों ने सकारात्मक बदलाव ही किये हैं।

महिलाओं ने भी सोशल मीडिया का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है जिनके लिए सोशल मीडिया बाहरी दुनिया को देखने समझने और जानने का तरीका है। वह दुनिया भर के पकवानों और उसे बनाने के तरीके को सीख और समझ रही है। बैगा जनजाति कि कुछ युवतियां, इसके इस्तेमाल से प्रतियोगी परीक्षाओं की भी तैयारियां कर रही हैं। नवीन संचार

Year-5 Volume: IV, October-December, 2023 Issue-20 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

माध्यमों के इस्तेमाल से जनजातीय पकवानों को गर्व की अनुभूति के साथ दुनिया के साथ साझा किया जा रहा है। नवीन संचार माध्यमों के इस्तेमाल से देशज खान पान का पक्ष ज्यादा मुखर हुआ है।

वयस्कों द्वारा भी सोशल मीडिया का भरपूर इस्तेमाल किया जा रहा है , जो अधिकतर समय इसका इस्तेमाल अपने निकट सम्बन्धियों और उनसे जुड़े लोगों के कुशलक्षेम जानने के लिए कर रहे हैं। तमाम ऑनलाइन समूहों के वह सदस्य है जो लगातार उन्हें उनके समुदाय, जनजाति, भौगोलिक क्षेत्र के बारे में खबर देने का कार्य कर रही है। अपने जनजाति से सम्बन्धित खबरें पढने से उन्हें ही गर्व कि अनुभूति होती है। यह कहा जा सकता है कि सामाजिक सरोकार से सम्बंधित विमर्श ज्यादा मुखर हुआ है।

बैगा जनजाति के लोग अपने लोक नृत्य और वाद्य कला को अन्य समाजों के साथ साझा कर रहे हैं। उनके इस पक्ष के मुखर होने का एक कारण यह भी है कि वह नवीन संचार माध्यमों के इस्तेमाल से उन्हें मंच मिला है जहाँ बड़ी दर्शक उनके कला को सराहने का कार्य भी कर रही है।

निष्कर्ष

बैगा जनजाति में भी अन्य जनजातियों की तरह सोशल मीडिया का उपयोग बढ़ा है। बैगा जनजाति में सोशल नेटवर्किंग साइट्स का इस्तेमाल किया जा रहा है हालांकि इन साइट्स का पिनेत्रेशन अभी काफी कम है। बैगा समुदाय में इस परिवर्तन के प्रति स्वीकार्यता है। डिंडोरी जिले में रहने वाली आबादी के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल स्वाभाविक होता जा रहा है। युवाओं में खासकर इसका इस्तेमाल सामान्य होता जा रहा है, जहाँ वो तकनीकीकरण के पक्षधर हैं और वह इसका इस्तेमाल अपने फायदे के लिए कर रहे हैं।

बैगा समुदाय की बड़ी आबादी कंटेंट उपभोक्ता है और सोशल मीडिया पर वह विभिन्न प्रकार के कंटेंट का उपभोग कर रहा है। वयस्कों में इसका इस्तेमाल अपने समुदाय के लोगों को संगठित करने के लिए किया जा रहा है और वह व्हाट्सअप पर समूह बनाकर सक्रिय हैं। महिलाओं में सोशल मीडिया का इस्तेमाल गाने सुनने, धारावाहिक देखने के लिए किया जा रहा है, दुनिया के खानपान को भी देखकर बहुत कुछ सीखा जा रहा है। बैगा समुदाय की एक बड़ी आबादी जागरूकता के लिए, देश दुनिया में घटित हो रही चीजों के लिए किया जा रहा है।

Year-5 Volume: IV, October-December, 2023 Issue-20 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

नवीन संचार माध्यमों के इस्तेमाल से पड़ने वाले प्रभाव को देखने का एक पक्ष यह भी है कि इससे कई पक्ष जैसे, लोक कला, सामाजिक विमर्श, संस्कृति का पक्ष मजबूत हुआ है। एक बड़े बाजार का रास्ता खुलने से बैगा जनजाति को लाभ मिल रहा है और वह अपने लिए रोजगार के लिए नए रास्ते बना रहे हैं।

सुझाव –

इन्टरनेट कनेक्टिविटी में हो रहे विकास के चलते, इन्टरनेट की उपलब्धता तेजी से हो रही है और आने वाले समय में सोशल मीडिया का इस्तेमाल बढ़ने की सम्भावना है। इसके चलते व्यवहार, भाषा, लोक संस्कृति, खान पान पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह बेहतर शोध का विषय है लेकिन जहाँ तक वर्तमान स्थिति की बात है, यह जनजातीय समुदायों में भी उतना ही स्वीकार्य है, जितना हमारे आपकी जिन्दगी में है।

मनोरंजन हेतु नवीन संचार माध्यमों के बड़े इस्तेमाल से भाषा एवं बोली पर भी प्रभाव पड़ रहा है और इस क्षेत्र में व्यापक शोध की आवश्यकता है।

संदर्भ

- Kumar Abhimanyu, Cultural and Traditional Life of Baiga Tribes in the State of Madhya Pradesh, in India: A Brief View, Anthropology and Ethnology Open Access Journal, 2021
- Jadav Kapil, Effects of Social Media on Students in Tribal Areas with reference to South India-A Study, 2022
- Agozzino, Alisa (2012). "Building A Personal Relationship Through Social Media: A Study Of Millenial Students' Brand Engagement". Ohio Communication Journal. 50: 181–204
- Fuchs, Christian (2014). Social Media: A Critical Introduction. London: Sage. ISBN 978-1-4462-5731-9
- Etaibi A Abdulla, Identity and Globalisation: Tribal Identity in the Age of Social Media, 2023
- Berezan, O., C. Raab, S. Tanford and Y.S. Kim. 2015. Evaluating loyalty constructs among hotel reward program members using eWOM. Journal of Hospitality & Tourism Research, 39(2), 198–224.
- Selay Ilgaz, Nurettin, Social Media Analytics in Predicting Consumer Behavior, CRC Press, 2023
- Karl Erik Rosengren, Media effects and beyond Culture, socialization and lifestyles, Routledge, 1994
- David Holmes, Communication Theory Media, Technology, Society, SAGE Publications, 2005